Samaye Bara Balwan

Mr Vijay Rawoo

कहानी -- समय बड़ा बलवान

लेखक -- विजय राऊ

“संसार है एक नदिया, सुख-दुख दो किनारे,
न जाने कहाँ जाएँ, ये बहते धारे। ”

सुख और दुख आते जाते हैं। कभी है सुख, तो कभी है दुख। जीवन में बहुत बदलाव आते हैं। हमारे गाँव में रामप्रसाद नाम का एक व्यक्ति रहता है। गाँव का भला आदमी है, गाँव में उसकी एक दुकान है, जहाँ पर वह घर बनाने के सामान बेचता है। दुकानदारी खूब चलती है। गाँव के लगभग सभी लोग उसी दुकान से अपने सामान खरीदते हैं। उसका जीवन बहुत अच्छी तरह चलता है। उसका परिवार सुखी है।

रामप्रसाद का एक छोटा परिवार है, उसके दो बच्चे हैं, एक लड़का और एक लड़की। उसकी बेटी उषा अभी पढ़ रही है। वह मोरिशस विश्वविद्यालय की छात्रा है। उसके लड़के का नाम देवराज है। देवराज बहुत अच्छा है। पाँच साल तक वह विदेश में डाक्टरी पढ़ता रहा, फिर स्वदेश लौटा। उसके बाद एक साल तक देश के अस्पताल में प्रैक्टिस करता रहा। उन दिनों जब देवराज अस्पताल में प्रैक्टिस करता था तब उसकी मुलाकात खुशी नाम की एक लड़की से हुई। लड़की बहुत ही सुन्दर है। दोनों में दोस्ती हो गई। कवि कहता है --

“प्यार का पहला खत लिखने में वक्त तो लगता है।
नए परिंदों को ड़ने में, वक्त तो लगता है।”

धीरे-धीरे उनकी दोस्ती प्यार में बदल गई।

न जिरह, न बहस, न तकरार हो ज़िन्दगी में प्यार बस प्यार हो।

थोड़े ही दिनों में दोनों एक दूसरे से बहुत प्यार करने लगे। ऐसा लगने लगा कि वे दोनों एक दूसरे के लिए ही बने हैं। पर कहाँ है मंज़िल, किसे पता ? क्या देवराज के माँ-बाप इस रिश्ते को स्वीकार करेंगे ? कहते हैं, कि हौसला बुलंद हो तो कुछ भी असम्भव नहीं। सफलता क्या है -- फूल का पराग, सीप का मोती, गगन का पक्षी, मन्दिर की मूर्ति, शंख की ध्वनि, हवन का धुआँ। जीवन को हर कदम पर नई जंग, नई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

अन्त में उनकी जीत हुई। कहते हैं कि प्यार में बड़ी शक्ति होती है। अन्त में देवराज के माँ-बाप को इस रिश्ते को स्वीकार करना ही पड़ा। परिवार के सभी सदस्य खुश हुए। अनेक रस्में निभाई गईं। जिस दिन सगाई हुई उसी दिन शादी की तारीख पक्की कर दी गई। रखी गई तारीख २४ मई २०२०

थी, पर क्या किसी को पता था कि भविष्य ने आगे के लिए क्या संजोया है? ज्योतिषियों ने कहा था कि दिन बहुत शुभ है।

दिसम्बर में सभी सुपरमार्केटों में प्रोमोशन होता है। देवराज के परिवार ने शादी के बहुत सारे सामान, उसी प्रोमोशन के समय खरीद लिए। किसको पता था, कि ज्योतिषियों के कहे बहुत शुभदिन के समय ही कोरोना वायरस की बीमारी देश को जकड़ लेगी । अचानक तूफ़ान सा खड़ा हो गया। पैरों तले से ज़मीन खिसक गई। देश के प्रधान मन्त्री ने मार्च महीने से देश में पूरा लोकडाउन का ऐलान कर दिया । कुछ दिनों के लिए पूरा लोकडाउन होगा। कोरोना वायरस से बचने के लिए कुछ महीनों के लिए जनता को सोस्यल डिस्टेंसिंग रखना पड़ेगा, मास्क पहनना पड़ेगा आदि। खासकर सभी को घर ही पर रहना पड़ेगा। जुटाव करने की मनाही हो गई। शादी या किसी अन्य प्रकार के अनिवार्य कार्यक्रम करते समय सीमित संख्या में ही लोग उपस्थित रहेंगे।

इस ऐलान से सभी लोगों को धक्का तो लगा ही पर देवराज के परिवार को अधिक चोट लगी क्योंकि लड़के की शादी तय हो गई थीं । शादी के लिए हॉल की बुकिंग कर दी गई थी। कैटरिंग, वेटर, भण्डारी आदि को भी पहले से ही देख लिए गए। सारे लोगों को न्यौता भी दे दिया गया था। अब इस लोकडाउन में विवाह भव्य रूप से तो नहीं हो सकेगा। मास्क पहनना, सोस्यल डिस्टेंसिंग रखना, जुटाव करने की मनाही आदि कठिन प्रतीत हो रहा था ।

इस परिवार को शादी की तारीख बदलनी पड़ी और जनवरी २०२१ के लिए रखी गई। फिर से सारी व्यवस्था करनी पड़ी। अब खाने के जो सामान आटा, दाल, चावल आदि शादी के लिए खरीद लिए गए थे, वे तो अगले साल तक शायद खराब हो जाए, इसलिए गरीबों में उनको बाँट दिए गए।

अब जो भी हुआ ईश्वर की मर्जी मानकर स्वीकार करना पड़ेगा। यह देखा गया कि लोकडाउन के सख्ती के पालन से कोरोना वायरस की कमर टूटने लगी। इसका फैलाव रुकने लगा। देश के विशेष डॉक्टर और स्वास्थ्य मन्त्री इस वायरस से संक्रमित लोगों की तलाश कर इस बीमारी के और फैलाव को रोकने का सतत प्रयास करते रहे। लगभग डेढ़ महीने के अथक संघर्ष के परिणामस्वरूप यह देश आज कोरोना वायरस मुक्त हो गया, किन्तु बाहर से आज भी एक दो आयात मामलों का पता, हवाई अड्डे पर ही लगा लिया जाता है। उनका तुरन्त विशेष अस्पताल के विशेष वार्ड के विसंक्रमित कक्ष में इलाज किया जाता है।

सरकार के उठाए कदमों से आज सभी चैन की साँस ले रहे हैं। देश की कोरोना रहित स्थिति देखकर रामप्रसाद की जान में जान आ गई। वह अपने बेटे के विवाह की योजना फिर से बना सकता है, किन्तु उसकी आर्थिक स्थिति आज पहले जैसी नहीं रही। वह अपनी योजना को भव्य रूप दे नहीं पाएगा। तीन महीनों से दूकान चली नहीं, बेटा जिसकी भरती हो जाने की अपेक्षा थी, कोरोना वायरस के कारण रुक गई अब दूकान चलने और बेटे की भरती होने का इन्तज़ार है। हाथ में कुछ आए तो वह कुछ सोचने के योग्य होगा।

चाहे देश कोरोना मुक्त है, फिर भी उसका प्रभाव सब पर पड़ा। देश के साथ व्यक्ति, परिवार और उद्योगों की आर्थिक स्थिति खराब हो गई। इसे सुधरने में समय लगेगा, फिर सबके चेहरे पर मुस्कान खिलेगी।

बेटे का उदास चेहरा देखकर रामप्रसाद ने कहा **“**उदास क्यों होते हो, पगले। भगवान सब पर मेहरबान हैं। जहाँ बड़े-बड़े देश इस बीमारी के सामने घुटने टेक चुके हैं वहाँ हमारा देश कोरोना मुक्त है। हमारी यहीं कामना है कि हम इस संकट से उबर जाएँ।

“पिता जी, **”** देवराज ने कहा **“**यदि मेरी नौकरी लग जाती तो, घर के खर्च में मैं भी हाथ बँटाता। आपके कंधे का बोझ ज़रा हल्का होता। **”** **“समय बड़ा बलवान ”** राम प्रसाद ने कहा **“**वह कब, किस ओर करवट ले, किसी को नहीं पता। बस अपना कर्म करते रहना चाहिए। **”**

1